॥ ॐ ॥

* श्रीगौतम स्वामीभ्यो नमः *

# मनोहर स्तवन संग्रह ।

श्रीयुक्त बीकानेर निवासी साह बोथरा बाबू बींजराज

—: की :—

धर्मपत्नी की तरफ से जैन धर्म-प्रेमियों

—: को :—
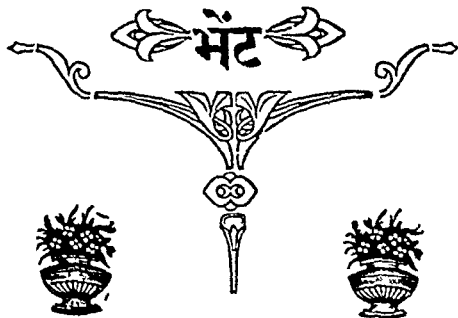
साह बोथरा श्रीयुत बाबू बींजराज जी

* श्री *

# भूमिका

श्री वीतराग प्रणीत धर्म के अनुयायी सज्जनो व बहिनो !

श्रीवृहत्खरतर गच्छीय गणाधीश्वर श्रीमान् सुखसागरजी महाराज साहिब के सिघाड़े के अन्दर श्रीमती परम पूज्या गुरुणी जी लक्ष्मी श्रीजी महाराज साहिब की परम मान्या निज शिष्या श्रीमतीजी शिवश्रीजी महाराज साहिब की विदुषी शिष्या परमोपकारिणी श्रीमती प्रेमश्री जी महाराज साहिब के उपदेश से मैं यह स्तवन तथा गहूंली संग्रह की छोटी सी पुस्तक आप लोगों के सामने उपस्थित करती हूं। मगर मेरे अन्दर न तो इतनी बुद्धि है और न तो मैं कुछ विशेष पढ़ी लिखी हूं। सिर्फ देव गुरु भक्ति के अन्दर मन तल्लीन होने से और उन्ही पूर्वोक्त गुरु महाराज साहिब की अतुल कृपा से बाल क्रीड़ा रूप बनाया है, इसके अन्दर अशुद्धि वगैरह जो कुछ त्रुटियां हों उन्हें आप लोग शुद्ध कर अवलोकन करें यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

आपकी हितैषी—

सौभाग्यमलजी धाड़ीवाल की सुपुत्री,

मनोहर कंवर।

* श्रीः *

# हिंसा की दर्दनाक कथा।

## अहिंसा विषय प्रार्थना पुस्तक

श्री श्री श्री १०००८ श्री सम्वेगी स्थानकवासी अथवा रहपंथी समस्त मुनी महराजो तथा साध्वीजी महाराज वधर्मी बन्धुओ और बहिनों से मनोहर की सविनय नम्र वेनती आप सब महानुभाव कृपा कर सुने।

ग्राम ग्राम तथा नगर नगर में और कलकत्ते जैसे बड़े नगर में जो भयकर जीव हिसा हो रही है उसका हाल सुनकर किस अहिंसा के पुजारी का हृदय दुखित न होगा। हजारों गाये भैंसे लाखों बकरों की हत्या प्रति दिन हो रही है और मनुष्यों का भक्ष्य बन रहा है क्या दुनियां में ऐसी चीजों की कमी है क्या अन्नादि खाद्य पदार्थ उत्पन्न नही होते जिससे कि बिचारे मूक प्राणियों के गले पर छुरी चलाने का वक्त देखना पड़ता है? बड़े अफसोस की बात है कि इन भयङ्कर हिंसाओ के प्रति आप लोग मौन साधे विराजे हैं। सबसे पहला कर्त्तव्य

दया कर इन्हें अभय दान दिलवा सकूँ और उपदेश देकर सा बन्द करवा सकूँ। कर्मोंने मुझे ऐसा मूर्ख क्यों बनाया ? ों नहीं मुझ में इतनी शक्ति दी, मैंने केवल जन्म लेकर पृथ्वी ो बोझल किया है। मुझे इसका बड़ा अफसोस हो रहा है। ांखों से अश्रु जल निकल रहा है, हृदय सागर की तरह उमड़ ला है, उन साधु, साध्वियों, श्रावक, श्राविकाओं एवं उप-शकों को धन्य है जो अपने उपदेश द्वारा जीवों को अभयदान देलाने का प्रयत्न कर रहे हैं और जीवों को मरानेवालों को उपदेश देकर उनके दिलों मे दया का बीज जमा रहे हैं। उन्हीं का मैं गुणानुवाद कर रही हूं और प्रभु से प्रार्थना करती हूं कि मुझ में भी ऐसा बल पैदा हो कि इस दुनियां में मैं उन जीवों को अभयदान दिला सकूँ।

देखिये पर्युषण पर्व में सभी मुनिवर हमें चोर की कथा सुनाते हैं कि चोर को सब से ज्यादा धन छोटी रानी ने दिया राजा के पूछने पर भी उस चोर ने यही कहा कि सब से अधिक धन मुझे छोटी रानी ने ही दिया, इस लिये उसी का मैं गुण गाऊँगा, क्योंकि जब तीनों रानियों ने मुझे धन दिया तब तो मुझे मरने ही मरने का भय था परन्तु चौथी रानी ने जब धन दिया तब से मेरे दिल का भय निकल गया और तब से मैंने कभी भी चोरी न करने की प्रतिज्ञा कर ली है। इस तरह चोर ने सच कह कर अपनी प्राण रक्षा भी कर ली और चोरी की आदत से भी मुक्त हो गया। वह चोर

अपनी शक्ति दिखाने के लिये, दूसरे जीवों को सुख पहुंचाने के लिये, एवं अपने कर्मक्षय के लिये एक कलकत्ता ही क्या समुद्र पार भी जा सकता है। अच्छी अच्छी जगहों में एवं नगरों में रहकर भक्तों की वाह वाही प्राप्त करने में बहादुरी और सच्चे ज्ञान का प्रदर्शन नहीं है। यह बात जरूर है कि विचित्र स्थानों में जाने में कितनी ही कठिनाइयों का सामना तो करना पड़ता है परन्तु कितने जीवों का फायदा होता है इसका भी जरा हिसाब लगाना चाहिये। साधु जनों का कर्त्तव्य है कि सब जीवों पर समान दृष्टि रखते हुए उनकी हित कामना करनी चाहिये और दुःखी प्राणियों का दुख दूर करने में रात दिन संलग्न रहना चाहिये, कहा भी है कि जिसका पेट भरा है उसे देने से क्या लाभ होगा, जिसका पेट खाली है उसी को देने में अधिक से अधिक लाभ हो सकता है। जो यह कहते हैं कि हम किसी को मारने को नहीं कहते, जीवों की रक्षा करना ही कहते हैं तो इससे क्या लाभ हुआ जब कि पूरे तौर से उपदेश नहीं दिया। इस हालत में जीवों की रक्षा कैसे हो सकती है? जिस तरह मुनिराज बड़े बड़े श्रावकों को पूजा प्रभावना का उपदेश देते हैं उसी तरह या उससे अधिक जीव रक्षा का भी उन्हें उपदेश देना जरूरी है। देखिये मन्दिर के अन्दर तो पूजा कराई जा रही हैं, अंगी रचाई जा रही है और बाहर जीवों की हिंसा हो रही है, यह कितने दुख और शोक की बात है।

रोकना ही हमारा धर्म है, क्योंकि सामायिक में हम लोगों को जीवहिंसा देखना कहां लिखा है? अब मेरी माता या पिता सामायिक लेकर बैठ जायँ और मुझे कोई आदमी या पशु मारने लगे और वे सामायिक में न छुड़ावें तो उनके दिल में कितना क्रोध होगा और सामायिक पूरी होने के बाद मारने वाले से कितना झगड़ा होगा और सम्भव है कि क्रोध से उस जीव की हिंसा कर डाले। इसलिये पहिले से ही जीव रक्षा करना कितना अच्छा है जिससे आगे झगडा बढ़ने का मौका ही न मिले, और न अपने लड़के के मारे जाने पर हाय हाय करने का ही मौका मिले। इससे सिद्ध होता है कि प्रत्येक जीव को बचाना ही मनुष्य का धर्म है फिर चाहे चूहा हो या अपना लड़का।

दूसरी बात यह है कि कलकत्ते में काली माई और अन्य स्थानों की दूसरी देवियां असंख्य बकरों के बलिदान से मनाई जाती है और बहुत लोग इन देवियों से यह मानता करते हैं कि अमुक अच्छा हो जायगा या अमुक को लड़का होगा तो उसे बकरा चढ़ायँगे। धन प्राप्ति के लिये भी ऐसी मानतायें मानी जातीं हैं। यह कितने भोले पने की बात है? यदि काली माई में इतनी शक्ति होती तो उसका पति क्यों मरता और वह पति के लिये इतनी मारी मारी क्यों फिरती, जिससे उसकी जीभ निकल गई जब कोई यह कहते हैं कि उसने भूल से अपने पति को मार डाला। कुछ भी हो स्त्री के चरित्र का

प्राप्त किये जिनका सुबह में दर्शन करके हम अपने को धन्य समझते हैं। उन महापुरुष को अभिमान छू भी नहीं गया था, फिर थोडी सी पूंजी पर अभिमान तथा गुमान करना कितना बुरा है।

हम परमात्मा महावीर देव के ही शिष्य हैं और उन्हीं से प्रार्थना करते हैं.—हे प्रभो! हे वीतरागा सुखदाता! दुखहर्ता हमे भी ज्ञान देकर प्रभु गौतम स्वामी सा बनाइये, हमें किसी भी बात का शोक न हो और हमारा जीवन परोपकार और अच्छे कामों में व्यतीत हो।

हे भाइयो! हमें देव गुरु और धर्म की उत्तम सामिग्री प्राप्त हुई है तो हमारा कर्त्तव्य है कि जीव हिंसा से बचें और जहां खून की नदियां बह रही हों वहां न जांय। भयंकर हिंसाओं को बन्द कराने का प्रयत्न करे। देखिये यदि—दान देंगे, ब्रह्मचर्य्य पालन करेंगे, तपस्या करेंगे, तथा पवित्र भावना भापेंगे, देवगुरु और धर्म का ध्यान लगावेंगे तो आपका जीवन सफल होगा और सब सामिग्रियां मिल जायँगी। जो पुरुप पहिले बड़े बड़े महल तथा मकानात बनाकर छोड़ गये हैं उन मकानों में आज कुत्ते भूँकते हैं, उनमें उनके भूत रेंगते हैं उनका कुछ उपयोग नहीं है और उन पुरुषों की कुछ गिनती नहीं है, परन्तु जिन भाग्यशाली पुरुषों ने प्रभु के मन्दिरों को बनवाया है दानशालायें खुलवाई हैं उनके नाम इतिहास में

मेरे दिल में जीव हिंसा की बात बहुत दिनों से [illegible] रही थी, आज उसी बात को आप लोगों के सामने [illegible] बड़ी खुशी हो रही हूं और सब लोग इससे फायदा तो मुझे और भी ज्यादा खुशी होगी। अन्त में मैं सब से [illegible] मुनि महाराजों और साधुनियों से प्रार्थना करती हूं कि [illegible] मुझ अजान की कथित अनुचित तथा कठोर बात को [illegible] कर कृतार्थ करें।

जीव हिंसा को बन्द कराने का कुछ प्रयत्न कीजिये और हमको खुशी बनाइये। भूल चूक सब माफ करें।

॥ इति ॥
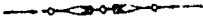
॥ ॐ ॥

श्री गौतम स्वामीभ्यो नमः ।

श्रीजिनदत्त कुशल सूरि गुरुभ्यो नमः ।

# मनोहर स्तवन संग्रह ।

## आदि जिनेन्द्र का स्तवन

देशीः चौमासी १

सिद्ध गिरि मोटो धाम हेरे लाल, जहां आदि जिनेन्द्र भगवानरे, पालित ने प्रभुजी देखी थांरी वार ॥ टेर० ॥

माता मरु देवी लाडलारे लाल,
पिता नाभि राजा चन्द्रे ॥ १ ॥ पालितने ॥

युगला धर्म निवारिया रे लाल,
दीना वरषी दान रे ॥ २ ॥ पालितने ॥

अक्षय तीज सुहावणी रे लाल,
घर घर मंगला चार रे ॥ ३ ॥ पालितने ॥

बारह मास को पारनो रे लाल,
कीनो आदि जिनेन्द्र रे ॥ ४ ॥ पालितने ॥

संवत् [illegible] [illegible] रे लाल,
वैशाख शुक्ल तीज रे ॥ ५ ॥ पालितने ॥

हरि आनन्द गुरु [illegible] रे लाल,
[illegible] ॥ ६ ॥ पालितने ॥

[illegible] रे लाल,
[illegible] ॥ ७ ॥ पालितने ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## ऋषभ स्वामी स्तवन २

॥ चाल—छोटासा बलमा मोरे आघणे ॥

शरणमें आयो प्रभु आपके, मैं सेवक तोरा ॥टेर॥
आदि जिनेन्द भगवान हो मैं सेवक तोरा॥शरण॥
माता मरु देवी नन्द हो,
मैं सेवक तोरा ॥ १ ॥
लक्ष चौरासी रुलतो फिरियो,
मैं सेवक तोरा, वार अनन्तिवार हो,
मैं सेवक तोरा ॥२॥ शरण०
अष्ट कर्म मेरे लार हो, मैं सेवक तोरा,
इनसे छुड़ावो जिनराज हो,
मैं सेवक तोरा ॥३॥ शरण०
मोहराजा के राज में मैं सेवक तोरा,
पायो दुख अपार हो, मैं सेवक तोरा,
॥ ४ ॥ शरण०

विश्वसेनजी के लाड़ला मारा बाला जो २
अचिरा देवी के नन्द बालाजी ॥ १ ॥
अष्ट करम खपाय के मारा वाला जो २
तोड्या करम जंजीर बाला जी ॥ २॥ शान्ति॥
हथणापुर रलियावणो मारा बाला जो २
वहां पर शान्ति जिनन्द बालाजी ॥ ३ शान्ति ॥
केशर भरियो बाटको मारा बाला जो २
पूजूं शान्ति जिनन्द बाला जी ॥४॥ शान्ति ॥
शान्ति जिनन्दजी को पूजता मारा बालाजी २
पाप नाशे सब दूर बाला जो ॥ ५ ॥ शान्ति ॥
संवत् १९९५ में मारा बाला जी २
फागुण मास गुलजार बाला जी ॥ ६ शान्ति॥
हरी आनन्द गुरु राज हे मारा बाला जो २
प्रेम गुरु हितकार ॥ ७ ॥ शान्ति ॥
मनोहर खड़ी प्रभु पास में मारा बाला जी २
मुझे प्रभु मुक्तिको चाव बालाजी ॥८॥ शान्ति॥

॥ इति सम्पुणम् ॥

प्रभु मुझे रखी आवे हो, जावे सब मिल नर नारी ॥ ४ ॥ दर्शन ॥

संवत् १९९५ में वर्षे फागुन मास हे गुलजारी, कृष्ण ७ प्रभु मुझ रली आवे हो, वार शुक्र हे मनोहारी ॥ ५ ॥ दर्शन ॥

सुख सागर भगवान हमारे हरि आनन्द गुरु उपकारी, शिव लक्ष्मी से प्रेम हमारा भिन्न २ देवे समझानी ॥ ६ ॥ दर्शन ॥

ऐसे प्रभु को मैं नित उठ ध्याऊं प्रभु भक्ती है मुझ प्यारी, मनोहर प्रभु से अर्ज करत है, अब देवो मुझ सेनाणी ॥ ७ दर्शन ॥

॥ इति सम्पूर्णम ॥

---

सामो तूंही दीसरयो है तुझके भी आऊंगा, आठ कर्म मेरी लार है प्रभु से छोड़ाऊंगा ॥ ५ ॥ मैं आया ॥

संमेत शिखरजी की महिमा देखीने हर्ष मनाऊंगा, विश जिन मुक्ति में पहुंचा गुण मैं गाऊंगा ॥ ६ ॥ मैं आया ॥

भोमियो बाबे को बचन लेईने घर पर आऊंगा, पार्श्व प्रभु भगवान से मैं मुक्ति पाऊंगा ॥ ७ ॥ मैं आया ॥

कार्त्ति कृष्ण प्रभु को भेटा हर्ष भराऊंगा, साल ६६ में १२ को आनन्द वर्षाऊंगा ॥ ८ ॥ मैं आया ॥

मनोहर की एक अर्ज विनती प्रभु से सुनाउगा, शिवपुरी का राज लेने को मैं भी आऊंगा ॥ ९ ॥ मैं आया ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

और देव मैं बहुत मनाया, अरिहन्त जैसा देव न पाया, गुरु हैं निग्रन्थ राय, ॥ तुमको लाखों ॥ ४ ॥

समत् १६६५ में पाया फागुन बदी सातम गुण गाया, वार शुक्र मनोहार ॥ तुमको लाखौं ॥ ५ ॥

सुख सागर गुरु नाथ हमारा, शिव लक्ष्मी गुरु प्रेम है प्यारा, मनोहर कें अवतार, तुमको लाखौं ॥ ६ ॥

॥ इति सम्पुणम् ॥

---

## पार्श्व जिन स्तवन ६

( तर्ज—चल २ चमन के बाग में )

इस जगमें प्रभु कोई नहीं मेरा क्या कहूं जिन राय ॥ टेर ॥

## महावीर स्वामी का स्तवन ११

आवो आवो सब सज्जन संघ मिल, वीर प्रभु गुण गावो, जय बोलो बलिहारी प्यारे वीर प्रभु की आज ॥ टेर ॥

श्रीमत् जिन हरि सूरीश्वर ने जयन्ति ठाट मचाया, संघ सकल में आनन्द छाया, गुण गाया, दिल चाया ॥ आ० ॥ १ ॥

शान्त मूर्ति गुरुदेव हमारे ज्ञान ध्यान का दरिया, देशना अमृत पान कराके भविजन मन को हरिया ॥ आ० ॥ २ ॥

शिष्य रत्नमणि कविन्द्र, करुणा विनय कुसुम विकशाया, प्रवर्त निजी प्रतापश्री आदि दर्शन कर सुख पाया ॥ आ० ॥ ३ ॥

फलोदी नगरमें संघ सकल मिल, उच्छव खूब मनाया, गुर्वादिकी की देशना सुनकर भवि जन मन सुख पाया ॥ आ० ॥ ४ ॥

संवत् उगनीसे सताण वर्षे चैत्र मास गुलजारी. शुक्ल तेरस शुभ वार शनिश्चर गुण गाया मनोहारी ॥ आ० ॥ ५ ॥

सुगन नाथ भगवान छगन गुरु शिव लक्ष्मी सुभग प्यारी. प्रेम हृदय में ध्यान लगा के निरखे दिलमें भारी ॥ आ० ॥ ६ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

ना पद स्तवन १२

ए नव पद ना ध्यान थी जगमें जय जय कार रे, रोग शोक सबी आपदा नाश होवे तत्काल रे ॥ नव ॥ ३ ॥

कुष्ट जलोधर रोग थी, व्याधी विविध प्रकार रे, भूत, प्रेत. पिशाचना भय जावे सब दूर रे ॥ नव ॥ ४ ॥

क्रोध, मान, मद त्याग के, ध्यावे जे सद्ध भाव रे, सर नर सुख जे अनुभवे पामे मोक्ष द्वार रे ॥ नव ॥ ५ ॥

सुखकारी भगवान है, छगन गुरु उपकार रे, लक्ष्मी शिव पद सार है प्रेम धरे नित्य ध्यान रे ॥ नव ॥ ६ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

# शान्तिनाथ जिन स्तवन १४

[ काली २ काजलियेरी रेखरे )

शान्तिनाथ भगवान् सदा सुखकार रे,
भगवान् २ जैने सेवे सुर नर वृन्द सत्वर ॥टेर॥
दर्शन करवा चालोनी हथनापुर नगर
मभार ॥ सत्वर ॥ १ ॥
अचिरा कुचो अवतरिया जिनराज रे २
विश्वसेन पिता कुलचन्द ॥ सत्वर ॥ २ ॥
चौतिस अतिशय पैंतीस गुणधार रे २
एनी मुर्ति मोहन कन्द ॥ सत्वर ॥ ३ ॥
लक्ष चौरासीमें भटक्यो मैं जिनराज रे २
अब शरण आयौ तुम नन्द ॥ सत्वर ॥ ४ ॥
शान्ति शिरोमणी प्रेम गुरु दील धार रे २
मनोहर को अव तार ॥ सत्वर ॥ ५ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

# स्तवन आदिनाथजी का

(देशी—तोरे पूजन को भगवान बनाया
मन मन्दिर आली सान )

प्रभु रिषव जिनन्द्‌भगवान्, लगीयो मन मेरो तुझ पे आन ॥ टेर ॥

सिद्ध गिरी तीर्थ जग में छाजे, मोरादेवी नन्द विराजे, तोरी ज्योती जगमग ज्ञान, ॥ लगीयो ॥ १ ॥

तेरा दर्शन नित उठ चाते, कर्म फन्द मुझ आय फँसाते, मुझे नहीं है इतना भान, लगीयो मन मेरो तुझ पे आन ॥ लगीयो ॥२॥

घट में तेरा ध्यान लगाते, दुखड़ो मेरो आय सुनते, मैं मूर्ख हूं नादान लगीयो मन मेरो तुझ पे आन लगीयो ॥ ३ ॥

तरण तारण प्रभु आप कहाते, डूबत नैया आप तीराते, मुझे दे दो मुक्ती का दान, लगीयो मन मेरो तुझ पे आन ॥ लगीयो ॥४॥

# स्तवन शीतलानाथजी का

मेरो बिनती प्रभु स्वीकार करो, मेरी अर्जी ऊपर तुम ध्यान धरो ॥ टेर ॥

लक्ष चोरासी दुख को मैं कुछ भी जाना नहीं, दुष्ट कर्म सता लिया, मैं कुछ भी पहिचाना नहीं, मेरा अष्ट कर्म प्रभु दूर हरो ॥ मेरी ॥ १ ॥

ज्ञान जग में छा रहा है, मैं मुर्ख समझा नहीं, दर्शन जिन का हो रहा है मैं मुर्ख जाना नहीं, मेरा ज्ञान खजाना भरपूर भरो ॥ मेरी ॥ २ ॥

शीतल जिन गुण गा रहा है, मैं शीतल जाना सही, अवगुण मेरा माफ कर, मनोहर को भी लाना सही, मेरे शीतल जिन जग नाम खरो ॥ मेरी ॥ ३ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

# स्तवन नेमनाथजी का

देशी—मोरी हुन्डी स्वीकारो महाराज रे
सांवरो गिरधारी ।

मेरी अरजो स्वीकारो जिनराज रे, सुनो मेरे दिलधारी, मेरे एक तिहारो अधार रे सुनो मेरे दिलधारी ॥ टेर ॥

तोरन पर तुम आईया, करी पशू पुकार, दया तो दिल में लाइया, त्याग्यो सब संसार रे, सुनो मेरे दिलधारी ॥ मोरी ॥ १ ॥

राखो लज्या महांयरी, गये कंथ गिरनार राजमती राणी भई, नेम तमारो नाम रे, सुनो मेरे दिलधारी ॥ मोरी ॥ २ ॥

डूबत नइया महांयरी नेम राजुल गिरनार, दासी मनोहर बीनवे, मुझे कर दो भव भव पार रे, सुनो मेरे दिलधारी ॥ मोरी ॥ ३ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

# स्तवन पार्श्व प्रभु का

( देशी—मैं हूं बहता फूल नदी का )

एक सहारा तेरा है प्रभु मेरे, एक सहारा तेरा ॥ टेर ॥

झुठी है काया, झुठी है माया, झुठा नर भरमाया, कुटुम कबीला कोई न तेरा, झुठा ही जाल फैलाया ॥ एक ॥ १ ॥

काण शीस पर आ रहा है, कोई नहीं फेरा, माता, पिता सब देख रहा है, नारी भी नहीं घेरा ॥ एक ॥ २ ॥

हंशा भी उड़ गये, मीटिया भी ले गये, जंगल में डेरा, सब स्वार्थ के हुये मुसाफिर, संघ नहीं तेरा ॥ एक ॥ ३ ॥

लक्ष चोरासी मोटी फांसी, तो भी नहीं [illegible]रा, गर्भावास अनन्त दुखों का बारम्बार से [illegible] एक ॥ ४ ॥

फंसा मैं कर्म के संघ मैं, रुला में राग के रंग मैं, डूबती नइया सागर में, तीरा दोगे तो क्या होगा ॥ तोरा ॥ २ ॥

हरी आनन्द के रंग में, प्रेम को वीनती सँग में, वीरसे ध्यान मनोहर का वचा दोगे तो क्या होगा ॥ तोरा ॥ ३ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## स्तवन श्री मन्द्रजी का

( देशी–तुमको लाखों प्रणाम )

सीमंधर जिनराज, तुमको प्रात प्रणाम, तुमको प्रात प्रणाम ॥ टेर ॥

एक अरज मेरी स्वीकारो, महाविदेह क्षेत्र मुझे देखारो, कर दो भव भव पार ॥ तुमको प्रात प्रणाम ॥ १ ॥

भव सागर में डूब रहा हूं, बईया पकड़ ले जाना पड़ेगा ॥ तुझे ॥ १ ॥

पर उपकारी कुशल शूरी हैं, अरजी पे ध्यान लगाना पड़ेगा ॥ तुझे ॥ २ ॥

भव दुख रंजन, पर दुख भंजन, कर्मों से मुझको हटाना पड़ेगा ॥ तुझे ॥ ३ ॥

श्री हरी पुज्य आनन्द उपकारी, प्रेम से प्रेम बढ़ाना पड़ेगा ॥ तुझे ॥ ४ ॥

मनोहर की है अरज विनती, शीवपुर रस्ता दिखाना पड़ेगा ॥ तुझे ॥ ५ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## जिनदत्त कुशल सूरि स्तवन

( देशी-जिनजी मैं तोरे गले हार डालूंगा )

जिनदत्त कुशल गुरुराज को, मैं नित उठ ध्याऊंगा, नित उठ ध्याऊंगा, मैं वांछित पाऊंगा ॥ १ ॥

मैं दर्शन करवा आया, मारे हिवड़े हर्ष न माया, मुझे गुरु बहुत सुहाया, जिसके नित उठजाऊंगा ॥ २ ॥

बावन वीर को वश में कीना, चौंसठ जोगणी पाय डाकण साकण भूत प्रेत को गुरु दिया भगाय ॥ ३ ॥

भूखा तो गुरु भोजन चावे, तिरिया चावे नीर, निरधनियां गुरु धनको चावे, गुरु बड़े गंभीर ॥ ४ ॥

नेत्र हीन गुरु नेत्र चावे, पांव हीन गुरु पांव, कोढ़ी तो गुरु कंचन चावे, यही है गुरु का काम ॥ ५ ॥

[illegible] फागन मास गुरु आये, [illegible] गुण को गाया, अथवा [illegible] ॥ ६ ॥

[illegible] गुरु को [illegible] ॥ ७ ॥

# स्तवन कुशल गुरो जी का

देशी-सरोता कहाँ भूलि आये प्यारे मोरे भइया

गुरुजी नहीं भूल जाना, हमको तुम प्यारे ॥टेर॥

धुधुका नग्र में जन्म लिया है, वच्छक पिता कहारी, बायड़ दे माता के दुलारे, दुगड़ गोत्र दिपारी ॥ गुरुजी ॥ १ ॥

पंच व्रतों को पाये गुरुवर, जैन धर्म दिपारी, महिमा तेरी पार न पावे, गुण अनन्त भंडारी ॥ गुरुजी ॥ २ ॥

चमतकार को नमस्कार कर, दर्शन को सब आरी, शहर कलकत्ता में आप बिराजो, कुशल दर्श जैकारी ॥ गुरुजी ॥ ३ ॥

पांच अंग नमाय के, मैं तुमको शीश नमारी, पुर्ण वांछीत मेरा पुरो, शुद्ध मन तुम को ध्यारी ॥ गुरुजी ॥ ४ ॥

खर तर गच्छ सिनगार है, मुझे बहुत सुहाते, कुशल शुरी दयाल सबको चमक दिखाते ॥ सेवोजी ॥ २ ॥

ब्राह्मण सुन बलीहार तुझ पे धूंश लगाते, मुरत पावोड़ी गाय को जैन मंदर में लाते ॥ सेवोजी ॥ ३ ॥

कैसा तुमारा उपकार है, पाखंड सब जाते, जीवत कर दीनी, गाय शीव मंदर पोहुंचाते ॥ सेवोजी ॥ ४ ॥

तोरी दया का नहीं पार है, मुगल ने जीआते, राजा मन हर्षाय, तोरे चरण नमस्ते ॥ सेवोजी ॥ ५ ॥

वीरा ने लीया है मनाय, जोगणी पांय लगाते, बीजली पे करी जै जै कार, चौरासी जीव बचाते ॥ सेवोजी ॥ ६ ॥

हरी आनन्द दयाल हैं, गुरु प्रेम कहाते, मोरी भी कर लो उद्धार, मनोहर मुक्ती चाते ॥ सेवोजो ॥ ७ ॥

ऐसे गुरु को जो नर ध्याया, पाप कर्म सब दूर पुलाया, नहीं पीछे पछतायां ॥ मुझ ॥ ६ ॥

जिनदत्त कुशल गुरु मुझे सुहाया, सब संकट गुरु मेरा मिटाया, शुद्ध मन से मैं ध्याया ॥ मुझ ॥ ७ ॥

संमत् १६६५ में पाया, फागुन कृष्ण दशमी गुण गाया, वार सोम मन चाया ॥ मुझ ॥८॥

सुखसागर गुरुनाथ कहाया, शिवलक्ष्मी गुरु प्रेम मनाया, मनोहर गुरु को ध्याया ॥ मुझ ॥६॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## * गहूंली *

जिन हरि सूरि महारासानी वाणी सुन लो रे नर नार, सुन लोरे नर नार, थे तो कर लो भवनो पार ॥ टेर ॥

उत्तम कुल में जन्म लियो है हरि सूरि गुरुराय, आठ वर्ष में संजम लीनो बाल ब्रह्मचारी कहाय ॥ जिन ॥ १ ॥

ॐ

शुरीजी अमृत का प्याला पिलाय दो,
सच्चा ज्ञान भी तुमाहरा दीराय दो ॥ टेर ॥
शुरीजी नइया भो डूबे तराय दो, मेरी
मोह ममता भी मिटाय दो ॥ शु० ॥ १ ॥
शुरीजी समकीत सुध दीराय दो, सोहे
निद्रा में मुझ को जगाय दो ॥ शु० ॥ २ ॥
शूरीजी चार कसाय छुड़ाय दो, मेरे
कर्मों का पड़दा हटाय दो ॥ शु० ॥ ३ ॥
शुरीजी भूल है मेरी सुधार दो, जरा सूत्र
से बोध कराय दो ॥ शु० ॥ ४ ॥
शुरीजी ज्ञान से ज्ञान बढ़ाय दो मुझे
आप जैसा भी बनाय दो ॥ शु० ॥ ५ ॥
शुरीजी मनोहर को रस्ता दिखाय दो,
मुझे मुक्ती की भिक्षा दीराय दो ॥शु० ॥ ६ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

ॐ

सहेली आया सब मिल चालो ए २ गुरु आनन्द महेन्द्र दातार गुरु माने दर्शन दीया ए ॥टेर॥

सहेली मारी शहर फलोदी ए २ कोई मुझने बहुत सुहावे, यहां पर गुरु पधारिया ए ॥ स० ॥ १ ॥

सहेली मारोजी बड़ो हर्ष है, मेरे मन में आनन्द वर्षाय क सब मिल गुरु को वधाया ए ॥ स० ॥ २ ॥

सहेली गुरु देशना सुन के ए २ मारो लहर लहर जीव जाय, गुरु से ध्यान लगाया ए ॥ स० ॥ ३ ॥

सहेली मेरी भाग्य उदय होयो ए, मारो धन गड़ी धन भाग क गुरु आनन्द को पाया ए ॥ स० ॥ ४ ॥

सहेली मारी समत् सताणु ए २ कोई वैषाख मास गुलजार, दसम दिन गुरु पधारिया ए ॥ ५ ॥

भूल चूक सब मेरी गुरु वर तुम आगल सुनाया, चतुर्मास का वचन गुरुवर बीकाणे फुरमाया ॥ अच्छा ॥ ५ ॥

हरि आनन्द है गुरु हमारा खरत्तर गच्छ दिपाया, प्रेम गुरु से विनती मेरी मनोहर के मन भाया ॥ अच्छा ॥ ६ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## ❋ गहूंली ❋

आनन्द गुरु का नाम जपता सारा संसार रटता सारा संसार ॥ टेर ॥

नग्र सैलाणा मेरे मन भाया, वहां पर जन्म आपने पाया, कोठारी गोत्र दिपाया ॥ जपता ॥ १ ॥

त्रैलोक्य सागर गुरु आप मनाया, संयम का रस्ता दिखलाया, बाल ब्रह्मचारी कहाय ॥ जपता ॥ २ ॥

## * गहूंली *

गुरु दर्शन मन मोहना रे लाल, प्रेम से ध्यान लगाय रे, चौमासे में गुरुवर है, बीकाणेरी वार ॥ टेर ॥

मरुधर देश सुहावणो रे लाल फलोदी नगर मझार रे ॥ चौ० ॥ १ ॥

लघुवय में संयम आदरियो रे लाल, विद्या तणा भंडार रे ॥ चौ० ॥ २ ॥

पांच महाव्रत पालता रे लाल, षट् काया प्रतिपाल रे ॥ चौ० ॥ ३ ॥

समता रस में झीलता रे लाल, भव्य जीवों के अधार रे ॥ चौ० ॥ ४ ॥

मधुकर भिक्षाको लावता रे लाल, बहिरो सूजतो आहाररे ॥ चौ० ॥ ५ ॥

शान्त मुर्ति सुहावणा रे लाल, ध्यान में ही लवलीन रे ॥ चौ० ॥ ६ ॥

अनुभव रसको खूब पिलाया, शुभ सिधी सब कोई सुहाया, सज्जन शिरोमणी राय ॥ जपता ॥ ३ ॥

वसन्त लहर दुनियां में छाया, विशाल विख्यात जगत मन भाया नित उठ शीश नमाय ॥ जपता ॥ ४ ॥

नगर बीकाने से मैं भी . आया, सद्‌ गुरुवा का दर्शन पाया, हिये हर्ष नमाय ॥ जपता ॥ ५ ॥

भूल चूक मेरी माफ करना, गुरु गुणोंको मनोहर गाया, चरणों की सेवा दिराय ॥ जपता ॥ ६ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## * गहूंली *

गुरुदेव तुम्हारा दर्शन करिने हिवड़े हर्ष न माय, गुरुराज तुम्हारा दर्शन देख्या, हृदय कमल हर्षाय ॥ टेर ॥

## * गहूंली *

मैं आया गुरु द्वार पे कुछ लेकर जाऊँगा,
लेकर जाऊंगा मैं वांच्छित पाऊंगा ॥ टेर ॥

शरण गुरुवर तोरे आया, शीश नमाऊंगा
प्रेम गुरुका दर्शन करके हर्ष मनाऊंगा ॥ मैं ॥१॥

वहुत दिनों की आश लगी मेरी तुझसे
फलाऊंगा, हृदय की मेरी नम्र विनती तुझ
को सुनाऊंगा ॥ मैं ॥ २ ॥

गुरु गुणोंको मैं नहीं जानूं मूर्ख कहाऊंगा।
भाग्य उदय मेरा हुआ तव दर्शन पाऊंगा
॥ मैं० ॥ ३ ॥

नग्र बीकाणे की बिनती तुझसे मनाऊंगा,
बचन मुझे फुरमावो गुरुवर तब मैं जाऊंगा
॥ मैं ॥ ४ ॥

तरण तारण गुरुराज को मैं नित उठ
ध्याऊँगा, कुमती मिटावो सुमती दिलावो
फिर भी आऊंगा ॥ मैं ॥ ५ ॥

हरि आनन्द है गुरु उपकारी गुण मैं गाऊंगा. प्रेम गुरु का शरण लिया अब कुछ नहीं चाऊंगा ॥ मैं ॥ ६ ॥

मनोहर की है नम्र भावना तुझ मे रम जाऊंगा मुक्ति पुरी का रस्ता बतादो जो लग जाऊंगा ॥ मैं ॥ ७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

* मनोहर गायन समाप्त *

शिष्या आपका शान्ति कहाया, क्षमा गुरुवर के मन में भाया, चारित्र धर्म दिपाया ॥ दर्शन ॥ ४ ॥

ऐसा बचन गुरु मुझे फरमाया, रोग शोक मेरा दूर हटाया, छिन में रोग गमाया ॥ ॥ दर्शन ॥ ५ ॥

दूर बैठी मैं गुरु मनाया, मन चाया, मेरा काज सराया, नित २ तुमको ध्याया ॥ दर्शन ॥ ६ ॥

मुझे गुरुवर भूल मत जाया, मन चाया मेरा, काम सराया, ज्ञान उपदेश दिराया ॥ दर्शन ॥ ७ ॥

ऐसे गुरु को जो नर ध्याया, पाप कर्म को दूर हटाया, समकित राह दिखाया ॥ दर्शन ॥ ८ ॥

सुखसागर गुरु आप मनाया, हरि आनन्द गुरु पाट दिपाया, शिव लक्ष्मी प्रेम से ध्याया ॥ दर्शन ॥ ९ ॥

चौदह वर्षमें दीक्षा स्वीकारा, पंच महाव्रत सुधा पाला, संजम को दिपाया ॥ तुमको ॥ ३॥

देश २ में आप विचरते, सूत्र सिद्धान्त को आप सुनाते, नर नारी हर्षाते ॥ तुमको ॥ ४ ॥

ऐसा धर्म मुझे बतलाया, शुद्ध समकित मुझको दिलवाया, नित उठ तुमको ध्याया ॥ तुमको ॥ ५ ॥

सुखसागर गुरु नाथ हमारा, प्रेम गुरु हैं मुझको प्यारा, मनोहर गुणको गाया ॥ तुमको ६ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## ※ गहूंली ※

( देशी-मेरे जिनजी बुलालो शत्रुंजे मुझे )

गुरुवर दर्शन मुझको दिरावो सही, इतनो अर्जी हमारी स्वीकारो सही ॥ टेर ॥

सुखसागर गुरु नाथ मेरे छगन गुरु उप-
कार हैं, हरि आनन्द गुरु आनन्द दाता, शिव
लक्ष्मी प्रेम अधार हैं, अब तो दासी मनोहर
को तारो सही ॥ गुरुवर ॥ ५ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## ※ गहूंली ※

( देशी-पपयो बोलियो )

सहेल्यां आपा सब मिल चालो ए २
कोई प्रेम श्री सा महाराज आप माने दर्शन
दीजो हे ॥ सहे० ॥ १ ॥

सहेल्यां म्हांरी शहर ब्यावर २ कोई
मुझको बहुत सुहावे ए, वहां पर गुरु
विराजेए ॥ सहे० ॥ २ ॥

सहेली मारी गुरु के जावूं ए मारा एक
पंथ दो काज मैं तो साथेई मनाऊं ए ॥
॥ सहे० ॥ ३ ॥

## * गहूंली *

( देशी—गण गोर )

दर्शन की बलिहार महाराज सा थांरा, दर्शन की बलिहार। हे जी थांरा दर्शन करवा आई ॥ महाराज सा थांरा दर्शन की बलिहार ॥ टेर ॥

राग नहीं, नहीं द्वेष महाराज सा, थे तो माया दीनी त्याग, हे जी थे तो विधातना भंडार ॥ महा० ॥ १ ॥

क्रोध लोभ को दूर हटाया, षट काया प्रतिपाल, हे जी सोला कषाय जीतणहार ॥ महा० ॥ २ ॥

कुमति हटावो सुमति देवो, अर्जी यही गुरुराज, हे जी शुद्ध समकित के दे नार ॥ महा० ॥ ३ ॥

प्रेम गुरु को वाणी मुझे सुहावे हो, महाराज सा, क्या कहूं गुण यश थांरा सा ॥ ॥ प्रेम० ॥ ३ ॥

प्रेम गुरु मुझे बड़े दयालु दीखे हो महाराज सा, शुद्ध समकित् दर्शावो सा ॥प्रेम॥४॥

प्रेम गुरु का गुण, मनोहर गाया हो महाराज सा, मुक्ति की राह बतावो सा ॥ प्रेम ॥ ५ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## ✻ गहूंली ✻

( देशी—छोटा सा बलमा मेरे आंगणे में )

शरण में आई गुरु आपके, अब मुझ ने तारो, तारोनी दीनदयाल हो अब मुझ ने तारो ॥ टेर ॥

गुण अनन्ता आप में हो, गुरुवर मेरे मुख से कहया नहीं जाय हो, अब मुझ ने तारो ॥ शरणो ॥ १ ॥

## * गहूंली *

( आज दिल हर्षे रे )

आज रंग वर्षे, मारो गुरु दर्शन बिन जीवड़ो तरसे रे, आज रंग वर्षे रे ॥ टेर ॥

पिता आपका कृष्णलालजी, मोता लाभू बाई रे, आसोज सुदी पूनम दिन, जन्म देख के हिवड़ो हर्षे रे ॥ आज ॥ १ ॥

गृहस्थापन में नाम आपका धुलिबाई मनोहारि रे, चौदह वर्ष की उमर हुई जब संयम् लीनो रे ॥ आज ॥ २ ॥

पंच महाब्रत सुधा पाले षट् काया रख-वाले रे, पंच इन्द्रियां को जीत के शुद्ध संयम् पाले रे ॥ आज ॥ ३ ॥

देश २ में आप विचरते करते बहु उपकारा रे, सूत्र सिद्धान्त को आप सुनाते, तारिया नर नार रे ॥ आज ॥ ४ ॥

## * गहूंली *

महाराज सा मैं तो थांरा दर्शन करवा आया हो, शुभकारी महाराज, उपकारी महाराज ॥ टेर ॥

महाराज सा दर्शन करके आनन्द मंगल पाया हो, शुभकारी ॥ उप० ॥ १ ॥

महाराज सा क्रोध, मान को दिलसे दूर भगाया हो, शुभकारी महाराज ॥ उप० ॥ २ ॥

महाराज सा राग, द्वेष हरी, भिक्षा मधुकारी लाया हो, शुभकारी महाराज, उपकारी महाराज ॥ राग ॥ ३ ॥

महाराज सा क्रोध नहीं, नहीं मान, नहीं है माया हो शुभकारी महाराज. उपकार महाराज ॥ क्रोध ॥ ४ ॥

महाराज सा दर्शन कर, शुद्ध समकित् मैंने पाया हो, शुभकारी महाराज, उपकारी महाराज ॥ दर्शन ॥ ५ ॥

महाराज मा हरि आनन्द सागर गरजु पाद दिखाया हो शुभकारी महाराज, उपकारी महाराज ॥ हरि आनन्द ॥ ६ ॥

महाराज मा प्रेम गुरु पण, तारी मनोहर माला हो शुभकारी महाराज उपकारी महाराज ॥ प्रेम गुरु ॥ ७ ॥

इति सम्पूर्णम् ॥

मैं हूं मूर्ख बहुत अज्ञानी हा २ गुरु है बहुत दयालु, विद्यामें अति दीपना ॥ अर्ज॥३॥

शिष्या आप का शान्ति स्वरूपी हा २ ज्ञान ध्यान लय लीन, गुरुका गुन गावना ॥ अर्ज ॥ ४ ॥

इतनी अर्ज गुरु मेरी भी माने हा २ नैया लगा दो पार, शिवपुर मुझने दिखावना ॥ अर्ज० ॥ ५ ॥

सुख सागर गुरु बहुत दयालु हा २ शिव लक्ष्मी दातार, उनसे हो मेरी बंदना ॥अर्ज॥६॥

हरि आनन्द गुरु ज्ञान बढ़ाया हा २ प्रेम से अर्ज गुजार, मनोहर गुन गायना ॥अर्ज॥७॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

गुरु सुखनाथ सुखकारी रे, छगन गुरु उपकारी रे, हरि आनन्द गुरु की जावूं वारी ॥ बलि २ ॥ ६ ॥

गुरु कलकत्ता नगर मझारी रे, गुरु शुक्ल पक्ष मनोहारी रे, गुरु शुद्ध तीज सोमवारी ॥ बलि २ ॥ ७ ॥

गुरु शिवलक्ष्मी है प्यारी रे, गुरु प्रेम हृदय में धारी रे, गुरु मनोहर को निस्तारो ॥ बलि २ ॥ ८ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

## * गहूंली *

( देशी—हां पर्वयर्यषण आया )

प्रेमश्री सा महाराज आपका दर्शन पाया रे, गुरुवर दर्शन पायो ॥ टेर ॥

पुस्तक मिलनेका पताः—

श्रीयुक्त साह बोथरा आसकरनजी भींवराज

मुकाम बोथरों की गुवाड़

बीकानेर, (राजपूताना)